शिवजी आरती - शीश गंग अर्धंग पार्वती

शीश गंग अर्धंग पार्वती, सदा विराजत कैलासी,
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुखरासी ||

शीतल मन्द सुगन्ध पवन, बह बैठे हैं शिव अविनाशी,
करत गान-गन्धर्व सप्त स्वर, राग रागिनी मधुरा सी ||

यक्ष रक्ष भैरव जहँ डोलत, बोलत हैं वनके वासी,
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुंजा सी ||

कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी,
कामधेनु कोटिन जहँ डोलत, करत दुग्ध की वर्षा सी ||

सूर्यकांत सम पर्वत शोभित, चंद्रकांत सम हिमराशी,
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित, सेवत सदा प्रकृति दासी ||

ऋषि मुनि देव दनुज नित सेवत, गान करत श्रुति गुणराशी,
ब्रह्मा, विष्णु निहारत निसिदिन, कछु शिव हमकूँ फरमासी ||

ऋद्धि-सिद्धि के दाता शंकर, नित सत् चित् आनंद राशी,
जिनके सुमिरत ही कट जाती, कठिन काल यमकी फांसी ||

त्रिशूलधरजी का नाम निरन्तर, प्रेम सहित जो नर गासी,
दूर होय विपदा उस नर की, जन्म-जन्म शिवपद पासी ||

कैलासी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुध लीजो,
सेवक जान सदा चरनन को, अपनो जान कृपा कीजो ||

तुम तो प्रभुजी सदा दयामय, अवगुण मेरे सब ढकियो,
सब अपराध क्षमाकर शंकर, किंकर को विनती सुनियो ||

शीश गंग अर्धंग पार्वती, सदा विराजत कैलासी,
नंदी भृंगी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुखरासी ||

www.hanumanchalisalyric.com